School of Studies in Anthropology
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.)

प्रेस विज्ञप्ति

मानवविज्ञान अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर एवं संकल्प सांस्कृतिक समिति, रायपुर के संयुक्त तत्वाधान में "ड्रग एब्यूज एण्ड ड्रग ट्रैफिकिंग प्रिवेंशन एण्ड लॉस अबाउट नशा मुक्त भारत अभियान" विषय पर एक दिवसीय "कैपेसिटी बिल्डिंग एण्ड अवेयरनेस" कार्यशाला का आयोजन दिनांक 19 अक्टूबर 2024 को मानवविज्ञान अध्ययनशाला के सेमीनार हॉल में प्रातः 10:30 बजे से किया गया। इंटिग्रेटेड रिहैब्लीटेशन सेंटर फॉर एडिक्शन, संकल्प संस्कृति समिति, रायपुर के वरिष्ठ परामर्शदाता श्री अजय श्रीवास्तव ने मुख्य वक्ता के रुप में अपने वक्तव्य में तंबाखू सहित विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थो एवं उसके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक दुष्प्रभावों का विस्तार से वर्णन करते हुए बताया कि कोई व्यक्ति छैः कारणों जैसे सखा समूह का दबाव, परिवारिक तनाव, घरेलू परिवेश, व्यक्तिगत समयाएँ, आकर्षण एवं जिज्ञासा में से एक या एक से अधिक कारणों की वजह से किसी नशीले पदार्थ के गिरफ्त में आ जाता है। उन्होंने आगे कहा कि चाहे कोई भी स्थिति हों हमें, विशेषकर आज के युवाओं को नशा को ना ही कहना होगा, क्योंकि यदि ना नहीं कहेंगे और उपरोक्त कारणों में से किसी एक कारण से भी गलती से एक बार नशीले पदार्थ का सेवन किया तो फिर समझ लिजिए कि आप उसके गिरफ्त में आ चुके हैं। इसलिए हमें नशा को ना ही कहना होगा जैसे नाली के गंदे पानी को हम ना ही कहते हैं, जलती चीता की आग को भी ना ही कहते है वैसे ही हर हाल में प्रत्येक नशे को ना ही कहना होगा तभी हम समाज को नशामुक्त कर पाएंगे। कार्यक्रम के स्वागत वक्तव्य में कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. अशोक प्रधान ने नशे के दुष्प्रभावों पर चर्चा करते हुए नशापान के विरूद्ध किए गए उनके प्रयासों की चर्चा की। कार्यक्रम के संयोजक एवं मानवविज्ञान अध्ययनशाला के विभागाध्यक्ष प्रो. जितेन्द्र कुमार प्रेमी ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि आज 21वीं सदी के दौर में भारत सहित समूचा विश्व विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों के गिरफ्त में आ चुका है विशेषकर युवा पीढ़ी में नशीली पदार्थों के सेवन से न केवल उनमें नैतिक और चारित्रिक पतन हुआ है बल्कि उनकी शारीरिक क्षमताओं में उल्लेखनीय कमी आई है। छत्तीसगढ़ के संदर्भ में प्रो. प्रेमी ने कहा कि पिछले लगभग डेड–दो दशक के दौरान छत्तीसगढ़ के ग्रामीण परिवेश में शराब सेवन एक महामारी की तरह फैल गयी है जैसे मानों छत्तीसगढ़ के गाँवों की गलीयों में शराब की नदियाँ बह रही हो। शराब की गलत नीतियाँ के कारण से शराब की उपलब्धता आसान हो गई है। इस संदर्भ में प्रो. प्रेमी ने कहा कि पहले चार–पाँच गाँवों के बीच शराब की केवल एक–आत सरकारी दुकान हुआ करती थी लेकिन आज कि स्थिति में गाँवों के हर गली एवं मोहल्ले में शराब आसानी से उपलब्ध है। परिणामस्वरूप अधिकांश ग्रामीण न केवल इसकी चपेट में है बल्कि यह छत्तीसगढ़ के सामाजिक–आर्थिक माहौल को दूषित कर दिया है साथ ही अनेक गंभीर शारीरिक बीमारियों का प्रकोप बढ़ते जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि नशाखोरी की समस्या को दृढ़ मानसिक इच्छाशक्ति एवं दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति से दूर किया जा सकता है।

दिनांक : 19 / 10 / 2024

19/10/2024

(प्रो. जितेन्द्र कुमार प्रेमी)
अध्यक्ष
(Dr. Jitendra Kumar Premi)
Professor & Head
Sos in Anthropology
Pt.Ravishankar Shukla University
Raipur (C.G.)

नशा क्या है ?
नशा किसी मादक पदार्थ या मादक द्रव्य के सेवन से संबंध ऐसी मानसिक एवं शारीरिक निर्भरता है जो प्रायः स्वैच्छिक नियंत्रण से परे होती है।
004/125/Anthro./Dev./2016
032/125/Anthro./Dev./2016

नशे का बन्धन तोड़ें जीवन से नाता जोड़ें...